દાણલીલા

દાહોદમધ્યે

પ્રાન્તવાડામધે ગોપાળદાસ
ભગવાનં [illegible]
[illegible] પ્રસિદ્ધ કરી

સંવત ૧૯૮૩
સને ૧૯૨૬

रास[redacted]ला.

छंद

[redacted]हैने, [redacted] व्रजराज,
गोरस बेचन हरि मिलै, ओक पंथ दो काज. १

चौपाई

प्रभु पूरन ब्रह्म अखंडा, जाके रोम कोटी ब्रह्मंडा,
प्रभु सरगुन ब्रह्म कहाये, मथुरा तें वृंदावन आये,
जहां देव लोक मुनि जेते, सब गोपी गुआलीन तेते,
देखौ [redacted] रूप दिखाये,
जब गोकुल ईच्छा कीन्ही, वसुदेव हि आज्ञा दीन्ही,
श्री नंद भुवन प्रगटाये, तहां नंद के लाल कहाये

छंद

जन्म लीओ वसुदेव गृह, नंद के बालक भये
छपन कोट यदुवंस माया, [redacted]थ गोपी ग्वालके
श्री कृष्ण के संग बहुत बालक, गौचरावन वन भये
जी गावत रासलीला, नो सज्जन कान दे

चौपाई

सब घर घरकी ब्रजनारी, [redacted]

मिलि झूंथ मतो सबकीजे, इमना नंद म्या गलीना-

आगै मोहन धेनु चरावै, [redacted] धनवै

जहां घाट सबनकी सोई, गुरजो वतानि आनंद होई

सब घाट ऊपर चलीआई, [redacted] सोयेन राई

ऐसे ग्वालक कहत पुकारी, तोहि रु[redacted] गवारी

छंद

तोहि सू सुनत बाहि गवारी, सुनरि कृष्ण ठाकुर घाटके

आई कहेन करो बिनंती, जनु हे पर्ष लागतके

हृदय समझी पिआरी ग्वालिनके गाछी छांडि कुंचली

दाणहे हु[redacted] तुम कु लली.

चौपाई

मीलीयु [redacted] निलीगे[redacted]

सुनो बात [redacted] नी

हम कौन कहां ते आई, हम कौ हरी पिनु नाई

तुम गोकुलकी [redacted], तु[redacted]

तुमरे सौर गोरस भारा हम हे तुम ना [redacted] र

कछु दाण हमारो लागे, ऐसि कै मन मा-न मागै

छंद

तीन लोक मोहन वन वने, घाट जमुना तीर को
नचत नाचत कुंज बन मे, हरत लाल अहीर को
हारे दयो वृषभान लाडली सुन सखी मन सों लीजिये
नंद के सुत लनि हम सों गर्व बहुत न कीजिये

सोरठा

न अज्याल सखा माला धरे, अति काम दुई महतेरे
कोई हिपंडा ी दयी आढे तब दुध दही दास बाढे
मे, [illegible] प्रभु [illegible] पलाई
कुछ मागा है [illegible] न [illegible] गई रीती नकीने
ब केसरा सुनो [illegible] तम कु कोउ हे सपरे है

छंद

केसराई के रान मे प्रभु [illegible] रीलीन कीजिये
नंद के गृह दुध उपने कुन [illegible] कीजिये.
दाम्मावत [illegible] तम कु [illegible] रए [illegible]
मांगा छाछ कुलीन नार नु मनहपीजिये

चौपाई

[illegible] नापी

। तीन लोक में देखो हम कोंजनि मानुष जे खौ
महि सब दैत्य संघारा, जे उग्रे कंस जीयारा
तुम कंसकु को करहु गुमाना तेहि को लिङ्गरो पीरबमाना
जब उग्रसेन जमेरान्ह हमकु जापता हि निवाज
हम सो हुट याह दनकीजे हंसी दाण हमारो दीजे

छंद

जको वेर पुसन [redacted] वै मन मानै सोई करे
पर जवान जलहीन जे तर कंसकेडर सो डरे
दही गोरस कौन बुझे देस जलरन जापने
जडीत हीरा लाल कंचन माग मोतिन सोभने

चोपाई

कोर [redacted] वेरावै कीत पावन ने पुर छावै
कीन कठ [redacted] रामानिक गुथे लाला
बाजुबंद कंगन जलसो है नक बेसर सोनगमो है
सिर वेनी गुथी वह लांती, तहां लागी रतन की पांती
मन मानिक [illegible] डोले म [illegible] रो कीटी कीकिलजोलै
कीन पाट पीतांबर कहिने कीन षोडस भुषन कीजे

छंद

हृदय हेरी विचारी ग्वालिनी कुंजन जनकी आट है
कुटिल छिको सबै भुपन्नको तुमारे साथ है
छीसी सब नको गण लागे रठन कोले सुंदरी
कुसलेम उरत नाहिं सुनत बात सबै री

चौपाई

अेक कुंगन लै न ब [redacted] हरि सों विनंती जकु कीन्ही
प्रभु पोर ब त कुछ लीने अब पार सब न करी जीने
अेक ग्वाल कै मचुराई तीन औघट नाव छुपाई
नब आये कृष्ण जी सों भाषा प्रभु नाव कहां जो दिखाया
अकुलाये उठी संग साथी प्रभु सां ऊपरी अेही भांती
तब कृष्ण सबै समुझावै अब नाव कहां कोउ पावै

छंद

औघट घाट गंभीर न मना रात के [redacted]
वाघ सिंघ चर पाजनमें कपन तुमको भरी कहे
जु इ म [redacted] पारा के
कोउ का कुहे [redacted] नाहीं अंत है विचारी कै

चौपाई

रूप ग्वालनि के मन माना पुग [redacted]